5-10-65.

"ओम"

प्रश्नावली

R- मुखड़ा देख ले प्राणी ---- ॐ शान्ति। यह किसने कहा है प्राणी अथवा आत्मा ? कहते हैं न उसके प्राण निकल गए तो आत्मा निकल जाती है न। तो प्राण आत्मा को कहें न कि शरीर को। बाप आत्मा से पूछते हैं पापात्मा हो या पुण्य आत्मा हो ? सभी अपने को पतित्त मानते तो हैं तो बाप कहते हैं अपनी आत्मा से पूछो हमने कौन कौन से पाप किये हैं कब से लिए हैं। पापात्मा हैं तो सभी परन्तु नम्बरवार तो होते ही हैं न। तो नम्बर वन पुण्यात्मा कौन है ? नम्बरवन पापात्मा कौन है ? यह है पापात्मा पतित उल्लूओं की दुनिया यह भारत के लिए ही कहा जाता है क्योंकि यही भारत पावन था अब पतित है उल्टा लटका है। उल्लू उल्टे लटकते हैं तो आज मनुष्य भी उल्टे लटके हुए हैं क्योंकि माया के गुलाम बनते हैं हम आधा कल्प माया को गुलाम बनाते हैं। जब माया को गुलाम बनाते हैं तब पुण्यात्मा कहा जाता है। L.N को भगवान भगवती कहते हैं तो अब वो कहां गए ? सतयुग में केवल लक्ष्मी नारायण तो नहीं थे परन्तु उनकी पूरी डिनैस्टी थी। उस समय को पावन भारत कहा जाता था दैवी गुण वाले थे कहते हैं न सर्व गुण सम्पन्न .... तो कहते हैं सम्पूर्ण निर्विकारी तो पुण्यात्मा ठहरे न फिर कहते अहिंसा परमोधर्म तो वे अहिंसक भी थे। हिंसा और अहिंसा यह दो शब्द आते हैं। हिंसा माना किसी का घात करना अहिंसा माना घात न करना। घात करना भी दो प्रकार का होता है काम कटारी से मारना यह भी हिंसा करना है दूसरा किसी को क्रोध में मारना तो यह भी हिंसा है इस कारण इस समय सभी पापात्मा हैं कहते हैं न मैं निर्गुण हारे में कोई गुण नाहीं तो नम्बरवार तो होते ही हैं लेकिन हैं सब पापात्मा तो जब बाप आते हैं तो बाप को पहचानना चाहिये। कहते हैं परमपिता तो उसका कोई पिता नहीं वह सब का पिता है वह सब का टीचर भी है परमात्मा जो परमधाम में रहते हैं। उनका कोई बाप तो है नहीं बाकी तो सब को बाप होते हैं B.V.S. का भी बाप है। कहते हैं न शिवाय नमः तो बाप हो गया न। बाप पुनर्जन्म में नहीं आते परन्तु वो कल्प में एक बार जन्म लेते भी हैं कहते हैं शिव जयन्ती तो जन्म हो गया न शास्त्र वादी तो यह नहीं जानते कि निराकार शिव कैसे जन्म लेते हैं कहते हैं शिव रात्री। रात्री कौन सी ? ब्रह्मा की रात्री के अन्त में आते हैं रात्री में मनुष्य अन्धकार के कारण धक्के खाते हैं न तो देखो भक्ति मार्ग में भी कहते हैं न आज गंगा स्नान करो आज चार धामों की यात्रा करो यह करो आदि तो धक्के खाने हो गए न यह हो गई रात्री। सतयुग त्रेता युग है दिन। सतयुग में सुख है तो ? को याद भी नहीं करते कहते हैं न दुख में स्मृति सब करें दुख में करे न कोई। तो भक्त बाप को सिमरण करते हैं साधू सन्त भी साधना करते हैं तो पतित ठहरे न पतित भारत को ही कहेंगे और खण्डों को नहीं क्योंकि भारत ही पावन था देवी देवता धर्म था पवित्र आत्मा रहती थी बाकी सतयुग में और धर्म नहीं थे बाकी धर्म की आत्मायें सजा खा कर पवित्र बनती हैं तो परमधाम में रहती हैं सतयुग में आती हैं सतयुग में सब सम्पति भी थी ऐसे नहीं कि सतयुग में आजकल की तरह है कि आज धन है कल नहीं है कभी अनुभव नहीं। सतयुग में तो है प्रालब्ध तो वहां 21 जन्म लिए सम्पतिवान रहते हैं। जब तक कोई बाप को न जाने तब तक उल्लू के उल्लू ही हैं। भले वह भी कहते हैं कि पवित्रता अच्छी है परन्तु पहले बाप को जानना है। यहां तुम्हारी है एक मत घर में तो अनेक मत होती है। बाप गणेश को याद करेगा तो बच्चा हनुमान को तो अनेक मत हो गई न। तो यहां तो तुम एक शिव बाबा को याद करते हो तो एक मत हो गई न एक बाप से ही बच्चे को वर्सा मिल सकता है रचना से तो मिल न सके। ऐसे तो किसी को बाबा कह सकते देते। गान्धी को भी बापू जी कहते थे। वह सब का बाप कहां नहीं था यह तो सभी का बाप है न। बाप से तो वर्सा मिलता है न। बाप और सभी जंजीरों से छुड़ाते हैं यह भक्ति की भी जंजीरें हैं। यह सभी समझते थोड़ेई हैं कि हम पतित हैं और पतित पावन एक

5-10-65

शिव बाबा है तो तुम बच्चे अब सत बाबा के संग में तुम एक सत्य P को मानते हो और सत्संग में आओ तो कोई मनह नहीं करते यहां तो सख्त मनह की जाती है जब तक बाप को न पहचाना है तब तक तुम यहां क्लास में बैठ न सको क्योंकि यहां अव्यभिचारी याद चाहिये। और जगह तो व्यभिचारी (अनेकों की) याद होती है यहां तो कहा जाता है जब तक अव्यभिचारी याद नहीं तब तक यहां बैठने के लायक नहीं। माता ने नालायक बना दिया है कहते हैं न मैं निर्गुण हारे माहें कोई गुण नाहीं .... तो साधु सन्त भी तो जाते हैं तो किसी में गुण नहीं है जो वा सब पतित है। पतित क्यों है? क्योंकि मुझे गाली देते हैं जो P को भी गाली देते उन जैसा पतित कौन होगा कहते हैं न P सर्वव्यापी है कुत्ते बिल्ली सब में है कहते हैं कुत्ते का बच्चा उल्लू का बच्चा तो गाली हुई न तो बाप कहते हैं जब मेरी भी ग्लानी करते हैं तब मैं आता हूं बाप समझाते हैं सभी भ्रष्टाचार से पैदा होते हैं सतयुग में सभी श्रेष्टाचारी हैं इस समय हैं भ्रष्टाचारी अच्छा समझो सन्यासी हैं तो फिर भी जन्म तो भ्रष्टाचार से लेते हैं न। तो भ्रष्टाचारी होने कारण मुझे भी गाली देते हैं B.V.S और L.N सब को भ्रष्टाचारी समझते हैं क्योंकि खुद भ्रष्टाचारी हैं जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि दिखाई पड़ती है। अगर यहां कोई बैठा हो और औरों को याद किया तो व्यभचारी याद हो गई भले ही याद पूरी रीति ठहरती नहीं क्योंकि माया बुद्धियोग तोड़ देती है फिर भी बुद्धियोग लगाना सिखलाया जाता है अन्त में तुम्हारी याद ठहर जायगी। तभी अन्त लिए शास्त्र हैं अति इन्द्रीय सुख गोप गोपियों से पूछो। यह संस्था इस लिये जल्दी वृद्धि को नहीं पाती क्योंकि यहां के कायदे कड़े हैं जब तक बाप को न जाने तब तक क्लास में बैठ न सके क्योंकि यहां अव्यभिचारी याद चाहिये। और कोई भी सचखण्ड का मालिक बना न सके। तुम अभी सचखण्ड के मालिक बाप द्वारा बनते हो अभी तो झूठ खण्ड है कहते हैं न झूठी माया झूठी काया --- तो P को भी गाली देते रहते छोटे २ बच्चों को भी गाली देते सिखा देते कि P सर्वव्यापी है बाप कहते हैं कि गुरु गोसाई आदि सब को भूलो मुझे याद करो। वास्तव में दुर्गति वाले को गुरु कहा ही नहीं जा सकता परन्तु भक्ति मार्ग में दुर्गति वाले को ही गुरु कहा ही नहीं जा सकता। तो यह गुरु गुसाईं मात-पिता सब दुख देते हैं। देखो बच्चे पैदा करते हैं वो भी सुख के लिये परन्तु उनको भी पतित बना देते। आधा कल्प ऐसा चलता ही है उनका कोई दोष नहीं। नाकी जब मैं आता हूं तो कहता हूँ पवित्र बनो तो बनना चाहिये न। समझो बाप शास्त्र में आता है पवित्र बनता है तो क्रीयेशन को भी पावन बनाना पड़े स्त्री, बच्चे पुरुष की क्रीयेशन ठहरी न। आगे बाप पतित था तो बच्चे को भी पतित बनाते थे परन्तु अब बाप पवित्र बने तो बच्चों को भी बनाना पड़े अगर बच्चे पवित्र न बने तो वह पूत नहीं कपूत है घर में अगर एक पवित्र बने एक न बने तो झगड़ा हो पड़ता इसलिये मनुष्यों के हृदय विध्वीरण होते हैं यहां सुनते हैं तो अच्छा २ कहते हैं परन्तु बाहर गये तो फिर कहते सन्यासी भी ग्रहस्थ में रह पवित्र न रह सके तो हम कैसे रह सकते यह कैसे हो सकता परन्तु यहां तो प्रतिज्ञा करनी पड़ती है बच्चे भी कहते हैं क्यों नहीं पवित्र बनेंगे। आधा कल्प तो हमने पुकारा है कि सद्गति दाता आओ अब आप आए हैं तो आपकी न मानेंगे तो किसकी मानेंगे बाप भी कहते हैं पवित्र न बनेंगे तो स्वर्ग में जा न सकेंगे। अगर बाप पवित्र बने बच्चे न बने तो कपूत ठहरे न फिर इकठा रहना मुश्कल हो पड़ता हंस और भुगते हो गए तो इकठे कैसे रह सके। कई तो स्त्री बनती पतित बनता तो स्त्री पुकारती है कि यह दुशासन नगन करते हैं कहते हैं हम घर से निकाल देंगे। बाप कहते हैं बच्ची तुम्हें सहन करना पड़ेगा अच्छा जाए काम करो बर्तन मांझो रोटी टुकड़ तो चाहिये न विकार में जाने से बर्तन मांझना अच्छा है। बच्ची को लौकिक बाप भी कहीं इसलाम नहीं देते वह भी कहेंगे हमने तो तुम्हारा हथयाला हाँ इस लिये बान्धा है तो विकार में जाना पड़े परन्तु परलौकिक बाप कहते हैं पवित्र बनो तो गोरे बनोगे बाप कहते हैं कि दो दान तो छूटे ग्रहण ५ विकारों का दान दो तो ग्रहण उतरे और तुम गोरे चन्द्रमा समान 16 कला सम्पूर्ण बन जायेंगे। श्री K

16 कला सम्पूर्ण हैं न अभी तो कला अभी सब पतित हैं फिर कहो नर्क वासी हो तो निगड़ पड़ते यथा राजा रानी तथा प्रजा भ्रष्टाचारी है। सतयुग है श्रेष्टाचारी। सतयुग में कोई रोते नहीं है। तुम रोते हो गोया अवस्था के कच्चे हैं तो यहां भी तुमको रोने का हुकम नहीं है। जब बाप मिला जो 21 जन्म की बादशाही देता है तो रोने की क्या दरकार है परन्तु यह भूल जाते तो रोते हो। यह रोगी दुनिया है भोगी दुनिया है सतयुग निरोगी योगी दुनिया है यहां बाप को याद करना है जब याद नहीं करते तो डिससर्विस करते हैं क्योंकि वायुमण्डल खराब करेंगे सब हैं ही पतित तो पतित को दान करने से पावन बन न सके पतित को दिया तो वह काम भी पतित करेंगे। यह पतितों का पतितो साथ व्यवहार है वहां पावनों का पावन साथ व्यवहार होगा व्यभचारी अक्षर तो बुरा है न पहले भक्ति शुरू में अव्यभिचारी की शिव की पूजा करते थे जीते देवताओं की भक्ति की जिसको रजोगुणी भक्ति कहा जाता अभी तो मनुष्यों की पूजा करने लग पड़े हैं सन्यासियों के चरण दो पीते हैं मनुष्यों की पूजा को भूत पूजा कहा जाता है अर्थात 5 तत्वों के बने शरीर की पूजा समझते कुछ भी नहीं तभी कहा जाता है अन्धे की औलाद अन्धे तुम हो सजे की औलाद सजे। तो वह अन्धेरे में धक्के खा रहे हैं कहते हैं गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु शंकर इनको गुरु कहना यह भी रांग है। शंकर तो है सूक्ष्म वतन वासी और विष्णु है सतयुग के रहने वाला वह भी प्रालब्ध भोगता है बाकी है निराकार गुरु। यह भी जबतक उस तन में बाप न आये तब तक यह भी किस काम का। बेहद के बाप कहते हैं जो मेरी मत पर चलेंगे वही मेरा सपूत बच्चा है। जैसे उस गवर्मेन्ट के आर्डीनन्स निकलते हैं न यह भी पाण्डव गवरमेन्ट का आर्डीनन्स निकलते हैं कि पवित्र बनेंगे तो पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे। तो कहते देह सहित देह के सर्व सम्बन्धों को भूल मामेकम याद करो तो बाप आइ देह से बुद्धि योग तुड़ाते हैं और आत्मा की P से सगाई कराते हैं तो बाप को याद करना चाहिये और देह से भी ममत निकालना है। मोहजीत राजा की कहानी है न तो तुम को भी मोहजीत बनना है। यह है युद्ध का मैदान अगर इस मैदान में ज़रा भी गफलत की तो माया हप कर लेती है। कहते हैं गज़ को ग्राह ने पकड़ा। कोई ऐसी बात नहीं कि गज अर्थात हाथी कोई पानी में गया ग्राह में पकड़ लियां नहीं यह बात भी यहां की है अच्छे 2 जो महारथी हैं, बहुतों को समझाते भी हैं अगर उन्होंने भी कोई गफलत की तो माया हप कर लेती है जो बाकसिंग से ही भाग जाते हैं पुरानी दुनिया में चले जाते। कड़ी सम्भाल रखनी पड़ती है क्योंकि माया से बाकसिंग है। यह समझने की बातें हैं सिर्फ सत् सत् कहने की बात नहीं। सत् सत् तो भक्ति मार्ग में करते हैं कि नासक्- त नाक से पैदा हुआ यह भी सत् हनुमान पवन से पैदा हुआ यह भी सत। यह हैं भक्ति मार्ग की बातें यहां तो हैं धारणा की बातें माया से युद्ध करनी है। अगर बाप का बन कर कोई पाप किया तो और ही सौंगा दण्ड पड़ेगा इसलिए बाप बहुत खबरदार करते हैं। अच्छा मीठे मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बाप दादा का याद प्यार और गुड मार्निंग। ॐ

पिताश्री "ॐ शान्ति" 6-10-65

R- महफल में जल उठी शमा .... ॐ शान्त गीत का अर्थ बच्चों ने समझा जिन्होंने यह गीत बनाए हैं वे इनका अर्थ नहीं जानते देखो कितने वेद शास्त्र उपनिषद् बनाए हैं परन्तु एक भी यथार्थ अर्थ को नहीं जानते। यथार्थ अर्थ को न जानने कारण वेस्ट आफ टाईम, वेस्ट आफ इनर्जी, वेस्ट आफ मनी करते हैं। बाप समझाते हैं तुमने बहुत 2 मन्दिर वेद शास्त्र उपनिषद् बनाए हैं यज्ञ तप जप किये हैं कितना पैसा खर्चा किया तो बाप किसको समझाते हैं? जो जीते जी मर कर बाप के बच्चे बनते हैं। तो जाना के बनते हो गोया तुम जीते जी मरे हो न तो अब बाप के साथ चलने की तैयारी करनी है। यह नहीं कि वहां तुम्हारा कोई बर्थ डे या अीवरसरी मनायेंगे, नहीं। यहां देखो जैसे गांधी का कितना धूम धाम से मनाते हैं तो वहां पर ऐसे नहीं होगा कि अभी शिव बाबा ज्ञान देकर चला जावेगा तो तुम फिर सतयुग में उनकी जयन्ती मनायेंगे जैसे भक्ति मार्ग में मनाते आते हैं। भक्ति मार्ग में शिव जयन्ती

मनाते हैं न तो आधाकल्प जो भी शरीर छोड़ेंगे तो उनकी एनीवरसरी नहीं करेंगे। गऊ दान करना पित्र स्नान आदि नहीं होगा क्योंकि दान किया जाता है कि दूसरे जन्म में मिले। सतयुग में तो तुम इस समय की प्राप्तियां खाते हो। तो भक्ति मार्ग के रसम रिवाज और ज्ञानमार्ग के रसम रिवाज में कितना अन्तर है। जो भी विशाल बुद्धि हैं वह इन बातों को समझेंगे और जो कल्प पहले विशाल बुद्धि बने होंगे वही अब बनेंगे क्योंकि यह फिर से वही पार्ट बजना है। गीत सुना न कि चारों तरफ लगाए फेरे फिर भी हरदम दूर रहे तो बाप कहते हैं तुमने भक्ति मार्ग में कितना माथा मारा है फिर भी मुझे मिल न सके क्योंकि जब मैं आऊं तभी तो तुम मुझे मिल सकोगे न। मैं आता ही हूँ कल्प कल्प संगम युगे। फिर वह कह देते कि मैं युगे २ आता हूँ। फिर कहते मैं २५ अवतार लेता हूँ तो यह रांग हो गया न मुझे बुलाते भी हैं कि पतित पावन आओ आकर पतितों को पावन बनाओ। तो अभी तुम्हारी युद्ध है माया रावण से। "WE ARE AT WAR WITH RAVANA" (हम रावण के साथ युद्ध कर रहे हैं) तुम्हारी कोई स्थूल वार नहीं है तुम रावण पर जीत पहनते हो। उसमें भी योद्धा कौन है? काम। तो इस विकार पर जीत पहननी है अर्थात् पवित्र बनना है जब खुद पवित्र बनें तो बच्चों को भी बनाना पड़े। ताकि वे भी विश्व के मालिक बन जायें। अगर अभी तुम उनको वर्सा देवे तो क्या देंगे ठिकर ठीकर ही देंगे। अच्छा देखो एमेरिका है वो क्या है ठिकर ठीकर ही है न क्योंकि अब सब खत्म हो जाने हैं। अभी देखो मरेंगे कैसे? जैसे जब पहाड़ों पर रात को बर्फ का तूफान आता है तो पंछी आदि सब खतम हो जाते हैं तो यह आमस के तूफान भी ऐसे हैं एकदम मरते जावेंगे मच्छरों सदृश्य। तुम जानते हो कि हम देखेंगे कि सब कैसे मरेंगे। और मर भी रहे हैं लड़ाई में देखो कितने मरते हैं। यहां तो मौत सब के सिर पर खड़ा है। सतयुग में मौत का भी डर नहीं होगा क्योंकि वहां अकाले मृत्यु नहीं होती। जो बाप ऐसी दुनिया में ले जाते हैं तो ऐसे बाप की श्रीमत पर चलना चाहिये न। यह सुप्रीम टीचर भी है तो पढ़ाई पर पूरा ध्यान भी देना चाहिये। कई हैं जिन्होंको पढ़ाई का कदर नहीं है। अगर समझो कोई सख्त बीमार है मरने पर है उसको भी किलास में लाकर बिठाना चाहिये। गीत भी है ना ज्ञान अमृत मुख में हो, गंगा का कंठा हो तब प्राण तन से निकले तो पढ़ाई का इतना कदर चाहिये। अगर लाचारी हालत में नहीं ले आ सकते तो घर में भी याद दिलाना चाहिये परन्तु पढ़ाई पर बहुतों का ध्यान नहीं है बाबा कहते हैं रेजिस्टर ले आओ तो मुझे उससे मालूम पड़ जाय कि कहां तक कौन पढ़ता है। और फिर बाबा पूछते हैं कि यह खुद पढ़ता है और दूसरों को पढ़ाता है? क्योंकि हम ब्रह्मणों का अन धन्धा ही यह है पढ़ कर पढ़ाना। इसमें ही कमाई है बाकी धन्धों में है धूल। उन ब्रह्मणों के कच्छ में है कुरम तुम्हारी कच्छ में है सच। सच खण्ड की स्थापना कर रहे हैं तुम्हारे ऊपर बड़ी रेसपान्सीबिलिटी है इसलिए बड़ी खबरदारी रखनी है मेहनत है पढ़ना और पढ़ाना है ऐसे नहीं कि सारा दिन पढ़ना पढ़ाना है नहीं क्योंकि तुम प्रवृति मार्ग वाले हो घर का भी काम भले ४ घन्टा करो। गवरमेन्ट ने भी कायदा निकाला है न ४ घन्टा काम करो आगे तो सारा २ दिन भी करते रहते थे। जब स्टीमर बाहर से रात को आते थे तो सारी २ रात भी दुकान खोल कर बैठते थे परन्तु अब गवरमेन्ट ने ४ घन्टे का कायदा निकाला है तो तुमको भी इस सर्विस में अवश्य लगना है। घर का काम कर फारिग हो फिर इस सर्विस में लग जाना है। यह सर्विस करना गवरमेन्ट स्वयं सिखलाती है। वहां भी गवरमेन्ट मिलिट्री आदि को सिखलाती है न। सिखलाती पिलाती भी है फिर वह उनकी सर्विस करते हैं ना। तो यहां भी तुमको बाप सिखाते हैं "WE ARE ON GODLY SERVICE ONLY" तो तुमको गाडली सर्विस करनी है सिर्फ ओनली गाडली सर्विस नहीं। ओनली हो गई सिर्फ अपनी बुद्धि की और खुद को पवित्र बनाना। हमको तो भारत को स्वर्ग हेवन बनाना है तो इस सर्विस में लग जाना है क्योंकि तुम्हारे ऊपर बड़ी रेसपान्सीबिलटी है जैसे चीफ कमान्डर, कैपटेन, आदि पर और ही अधिक जवाबदारी रहती है यहां भी ऐसे हैं जो अच्छे अच्छे बच्चे सेन्टर खोलते हैं वो हो गए कमान्डर। इस युद्ध का मार्शल है शंकर। कहते हैं शंकर ने आंख खोली तो खतम। बाप विनाश नहीं करते

5-10-65

करवाते हैं। तो इन बच्चों पर जवाबदारी ठहरी ना। तो यह हर एक को अपने को देखना है कि हम सर्विस के बजाए डिससर्विस तो नहीं करते हैं। एक तो सन्यासी बाप से बेमुख करते हैं दूसरे कहीं २ अपने बच्चे भी बाप से बेमुख कर देते। जैसे आज तो पढ़ते रहे और बाप का परिचय भी देते रहे और फिर अगर बाद में पढ़ाई न पढ़े और धारणा न करे तो फिर दूसरों को कह न सकें कि पढ़ाई पढ़ो। बहुत हैं जो भाई बहिनों से रूठ पढ़ाई छोड़ देते हैं यह नहीं समझते कि पढ़ाई छोड़ने से गुरू के निन्दक बन जाते हैं गोया ऑखें को भी बाप से बेमुख करने अर्थ निमित बन पड़ते। तो कहते हैं गुरू के निन्दक ठौर न पाय तो सतयुग में ऊँच पद पा न सके यहां बाबा रेजिस्टर मगाते हैं तो उससे समझ जाते हैं जैसे स्कूल में मां बाप टीचर रेजिस्टर से ही समझ जाते हैं कि बच्चा कहां तक पड़ता होगा। कई बच्चे ऐसे होते हैं जो सारा दिन खेलते कूदते रहते और [illegible] के टाईम पर घर आ जाते कि हम स्कूल पढ़ कर आया। कई के मां बाप तो फिर रेजिस्टर भी नहीं देखते तो उनको मालूम भी नहीं पड़ता। कई यों के मां बाप रेजिस्टर देखते और ध्यान रखते हैं तो बच्चे पढ़ जाते और यहां शिव बाबा तो अर्न्तयामी है इस साकार को तो रेजिस्टर दिखाना पड़े न। बच्चे कहते हैं ऐसे ऐसे तूफान आते हैं बाबा कह देते कि तूफान तो मेरे पास पहले आते हैं क्योंकि जब तक इसको अनुभव न हो तब तक बच्चों को कैसे समझा सके। अच्छा चलो तुमको माया सारी रात भी हैरान किया नींद भी न करने दी टाईम भी वेस्ट किया यह तो उसका फर्ज है टकरायेगी जरूर। बाकी तुम्हारा काम है फिर बाप को उतना ही याद करना याद कर उस कमी को भर देना। परन्तु कई बच्चे हैं जो जरा सी भी माया आई तो बस चले जाते हैं जैसे वैद्य लोग कह देते हैं कि दवाई लेने से बिमारी उथलेगी परन्तु कई जरा सी बिमारी ने उथल मारी तो उस डाक्टर को छोड़ देते हैं दूसरे के पास चले जाते हैं तो यहां भी ऐसे है कि ज्ञान को छोड़ भक्ति मार्ग के साधु सन्तों पास चले जाते हैं। फिर कह देते कि यह किसी और ने कहा कि ग्रहस्थ व्यवहार में रहते शादी करके पवित्र बनो यह कौन सी नई मुसीबत है? किसी और ने तो ऐसा कहा नहीं अरे तुम कहते हो न कि हमको राजा जनक मिसल ग्रहस्थ में रहते जीवन मुक्ति चाहिये तो ग्रहस्थ में तो रहना पड़े न। कई फिर कह देते कि बात तो ठीक है ना [illegible] ऐसा कह कर घर से ऊपर जाना ही है ना देखो दिलवाला मन्दिर में भी है न कि नीचे तपस्या कर रहे हैं और ऊपर में उनको प्राप्तव्य होना है तो ऊंची मंजिल तो है ही कहते भी हैं चढ़े तो चाखे बैकुण्ठ रस गिरे तो चकना चूर इसलिये बड़ी सावधानी से चलना पड़ता है उतरना नहीं होता। कहते हैं यह गीता का अथारिटी है तो गीता-ए तो आजकल अनेक हैं टैगोर गीता, गांधी गीता आदि --- आजकल तो जो घर से रूठते वह गीता का अर्थ कर देते और अपना नाम डाल देते हैं एक गीता में लिखा है बैंगन खाने से यह होगा, तोरी खाने से यह होगा यह (ब्रह्मा) रोजाना गीता पढ़ते थे कहां भी जाते थे चाहे राजाओं पास भी जाते थे गीता का पाठ जरूर करते थे। तो मनुष्य समझते थे यह भक्त है। मनुष्य समझते हैं कि भक्त ठगते नहीं हैं परन्तु भक्त जितना ठगते हैं उतना और कोई नहीं क्योंकि भक्ति में है ही करपशन एडलटरेशन। पढ़ाई को नहीं छोड़ना है नहीं तो माया अजगर खा जावेगा। और आदि में पछताना पड़ेगा। जब धर्मराजपुरी में एक एक जन्म का साक्षात्कार कराते जाते हैं और सजा देते जाते हैं बाबा ने समझाया है न जब काशी कलवट खाते थे मुक्ति के लिये। जीवन मुक्ति को तो कोई जानते ही नहीं। क्योंकि वह समझते हैं कि सुख कांग विष्टा समान है तो समझते हैं स्वर्ग के सुख भी ऐसे हैं समझते हैं त्रेता युग में भी तो सीता चुराई गई वह भी तो दुख है और तुम सारी बात को जानते हो कि सतयुग यह बातें नहीं थीं। यह भारत की ही कहानी है बाकी तो और धर्म वाले इस ड्रामा अन्दर बाइ प्लाट हैं ड्रामा में भी बाइ प्लाट होते हैं न। भारतवासियों के ही 84 जन्म हैं और धर्म वाले तो 84 जन्म नहीं लेते। जो सूर्यवंशी बनते हैं वह ही 84 जन्म लेते कहते हैं न आत्मा P अलग रहे बहुकाल --- इसके अर्थ को भी तुम अब जानते हो सकता तो सिर्फ जाते रहते हैं जानते कुछ भी नहीं। यह ब्रह्मा भी तो शक्ल था न इसने भी

5-10-65

कितना गुप्त किया था परन्तु है सब ठग। तभी इनको बाप कहते हैं सर्वधरिमान् ... तो वह थोड़ेई जानते भले गीता आदि पढ़ते हैं परन्तु है जंगली तोते तुम्हीं अब कण्डी वाले बन विजय माला में पिरोये जावेंगे। दुनिया भला इन बातों को क्या जाने ! उनको तुम अगर लिटरेचर दो तो वह पढ़ कर फेंक देते जैसे बन्दर को रत्न दो तो फेंक देते अगर चने दो तो खा लेते। यह बन्दर भी क्या जाने ज्ञान रत्नों को। तुम बच्चे जो कल्प पहले देवता धर्म के थे वही अब ब्राह्मण बने हैं जो अभी [illegible] यह सैपलिंग लग रहा है न। वह गवरमेंट तो काटों का सैपलिंग लगाती कहाँ पाण्डव गवरमेंट देवता धर्म का सैपलिंग लगाती कितना फर्क है जब देवता धर्म का सैपलिंग पूरा होगा तो पुरानी दुनिया का विनाश हो जावेगा। विनाश के आसार तुम बच्चे देख ही रहे हो जैसे यादवों और कौरवों की लड़ाई लगती है ड्रामा अनुसार NOTHING NEW नहीं तो क्यों कहा कि रक्त की नदी बहेगी कोई हिन्दू थोड़ेई आपस में लड़ेंगे। यह लड़ाई है ही यादवों और कौरवों की और हम भी इस समय युद्ध पर हैं YOU ARE AT WAR WITH RAVANA जैसे वहां भी कमाण्डर देखते रहते हैं न कि लड़ाई ठीक तरह चल रही है या नहीं, कोई ट्रेटर तो नहीं बन गया ट्रेटर के लिये बहुत बड़ी सजा होती है तो यहां भी ऐसे है अगर कोई बाप का बन कर फिर ट्रेटर बन जाते. तो धर्मराज पुरी में उनको बहुत बड़ी सजा मिलती है चमड़ी उधेड़ते हैं यह भी बच्चों ने साक्षात्कार किया है तो काशी कलवट की बात बताई न जब बल चढ़ते हैं तो उन्हें अनेक जन्मों के पापों की सजा भोगते हैं और फिर दूसरे जन्म में नये सिर कर्म शुरू होते हैं मुक्ति में तो कोई जाते नहीं कहते हैं फलाना पार निर्वाण गया वह है तो सब झूठ। कहते हैं न पतित पावन आओ सब का सद्गति दाता एक समझ की बात है न बाप जब आते हैं तो कईयों को गति कईयों को सद्गति देते हैं। P में अब अर्डर निकला है पवित्र बनो। फिर कहते दुनिया कैसे चलेगी ? अरे मूर्ख तुम कहते हो न अन्न खाने को नहीं ही है प्रजा कम होनी चाहिये कभी कभी बच्चों को यह ख्याल आता है ऐसे करते तो ऐसा होता अच्छा होता। यह ख्याल आना ही नालेजफुल बनना है। ड्रामा के पट्टी पर पूरे नहीं रहते तो ऐसे ऐसे कहते रहते हैं। अच्छा मीठे मीठे बच्चों प्रति मात पिता बाप दादा का याद प्यार और गुड मार्निंग। .. ॐ रात्रि क्लास - 3-10-65

बादल आते हैं ज्ञान सागर पास बढ़ने लिये फिर वहां जा कर बरसते हैं यहां पर जैसे कि ईश्वरीय घर मेहमान हो वहां तो जैसे गोरख धन्धा है। यहां तो सिर्फ अपने दैवी भांति ही दिखलाई पड़ते हैं। वहां का तो वातावरण ही और है। देखते हो कि बरोबर भगवानो वाच्य ठीक है नशा भी चढ़ता है कि सन्मुख बैठे हैं। सन्मुख और दूर में फर्क तो रहता है न। पहले थे आसुरी सम्प्रदाय अभी है ईश्वरी सम्प्रदाय फिर शरीर छोड़ बनेंगे दैवी सम्प्रदाय। भक्ति मार्ग में सिर्फ महिमा करते हैं यह थोड़ेई जानते कि किसकी महिमा करते हैं। क्रश्चन तो फिर भी जानते हैं कि हमारा धर्म पिता कौन है भारत-वासी तो इतना भी नहीं जानते और यह भी कहते हैं क्राईस्ट के 3000 वर्ष पहले देवता था यह भी सिर्फ कहने मात्र कहते हैं लेकिन जानते तो वह भी नहीं क्योंकि ज्ञान नेत्र हीन हैं। तुमको अभी ज्ञान-नेत्र मिले हैं। साधु सन्त सब विप्रीत बुद्धि हैं तुम पाण्डवों की है प्रीत बुद्धि तुम बाप से स्वर्ग का राज्य ले लेते हो जो कोई छीन न सके। यह है डबल राज्य जानते हो हम श्रीमत पर राज्य स्थापन करते हैं गुप्त रीति और कोई जान सके।